शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2014

हिन्दी काव्य में शोध की चुनौतियां एवं संभावनाएं

डॉ.अर्चना चतुर्वेदी, विभागाध्यक्ष हिन्दी
प्रो.मोनिका पटेल, सहायक प्राध्यापक
श्री क्लॉथ मार्केट इंस्टिट्यूट ऑफ़ प्रोफेशनल स्टडीज
इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में नवीन अन्वेषण को अनुसंधान कहा जाता है। जब यह अन्वेषण वैचारिक एकसूत्रता के साथ व्यवस्थित रूप को ग्रहण करता है तो उसे शोध प्रबन्ध की संज्ञा मिल जाती है। अनुसंधान की मौलिकता ही उसकी आत्मा है। प्रस्तुत शोध पत्र में हिन्द काव्य में शोध की चुनौतियाँ और संभावनाओं की चर्चा की गयी है।

प्रस्तावना

साहित्यिक अनुसंधान के सम्बन्ध में यह प्रश्न उठता है कि ज्ञान के सम्बन्ध में प्रयोग और चिंतन के द्वारा जिस तरह मौलिक उद्भावना की सम्भावना रहती है क्या उस तरह साहित्य-चिंतन की परिधि में सम्भव है ? तात्विक दृष्टि से विचार करने पर यह बात स्पष्ट रूप से सामने आती है कि साहित्य के सन्दर्भ में अनुसंधान और उसकी मौलिकता का स्वरूप ज्ञान विज्ञान की शाखा से भिन्न प्रकार का है, क्योंकि साहित्य कला है जबकि अन्य विषय विज्ञान को परिधि में आते हैं। अनुसंधान के स्वरूप में अनुपलब्ध तथ्यों का अन्वेषण करना तथा उपलब्ध तथ्यों अथवा सिद्धान्तों का पुनर्विवेचन करना मौलिकता की उद्भावना करता है। अनुसंधान में ज्ञात से अज्ञात की ओर जाना पड़ता है, और मौलिकता की स्थापना में तथ्यों को प्रमाणित करना पड़ता है। साहित्य सम्बन्धी शोध के द्वारा ज्ञान क्षेत्र का विस्तार एक ज्ञात परिधि में होने के कारण अनुसंधान की मौलिकता की प्रवृति और उसके स्वरूप को संकुचित भी कर देता है। सर्वथा मौलिक उद्भावना के अभाव में भी साहित्य के सम्बन्ध में नवीन अन्वेषण की गुंजाइश अवश्य है। हिन्दी शोध में तो विश्वविद्यालयों में सामंजस्य नहीं है, दूसरे विश्वविद्यालयों में शोध हो चुके हैं, उसी विषय पर अन्य विश्वविद्यालयों में पंजीकरण मिल जाता है। अनेक विश्वविद्यालयों में पहले विषय का पंजीकरण कर लिया जाता है, उसके बाद विस्तृत रूपरेखा ली जाती है, जबकि उस समय तक शोध छात्र के पास विषय की सामग्री ही नहीं होती है। हिन्दी काव्य में इस प्रकार के विषय चुने जाते हैं जिन पर वैज्ञानिक शोध संभव ही नहीं है। जैसे 'सूरदास और उनका साहित्य', 'दिनकर व्यक्तित्व और कृतित्व' अथवा 'बच्चन का काव्य' इस प्रकार के विषयों में न तो किसी लक्ष्य का निर्धारण है और न किसी खोज की गुंजाइश। लेकिन समस्या का समाधान आलोचना करने से नहीं हो सकता, उसी प्रकार वीरगाथा काव्यों में रचनाकाल कई शताब्दियों के पूर्व का है। अतः नवीन खोजों के लिए प्रामाणिक सूत्रों को खोजना चाहिए।

हिंदी काव्य में शोध

वर्तमान हिन्दी भाषाक्षेत्र में अपभ्रंश आदि भाषाओं की खोज की आवश्यकता है, वीरगाथा कालीन काव्य में काव्य की खोज करते समय शोधार्थी को प्रादेशिक भाषाओं के साथ उनका तारतम्य भी जोड़ना चाहिए। संत साहित्य का साहित्य में इतिहास के साथ-साथ भक्ति की भी अलग-अलग परम्पराएं देखने को मिलती हैं। निर्गुण तथा सगुण भक्ति भावना की अपनी विषिष्ट परम्परा तथा उसके सत्य स्वरूप को ठीक तरह से समझने के लिए भारत में प्रचलित विभिन्न धार्मिक आस्थाओं तथा उनकी संस्कार पद्धतियों आदि से भी कहीं प्रत्येक की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और परम्परागत दार्शनिक स्थापनाओं तथा मान्यताओं की विशद गहरी जानकारी आवश्यक होती है। अधिकाँश संतों की भाषा तत्कालीन हिन्दी की वह विशिष्ट शैली थी, जिसको आधुनिक हिन्दी से सहज जोड़ा जा सकता है। अपनी इस विशिष्ट भाषा शैली के कारण ही इन संतो की वह वाणी सम्पूर्ण भारत में उसी रूप में फैली। संतों की समूची वाणी कई सदियों तथा उनके साम्प्रदायिक अनुयायियों अथवा उनके अन्य प्रशंसक साधकों के बल पर ही चलती रही थी, समय के साथ-साथ उनमें इन अनुयायियों द्वारा क्षेपक जुड़ते चले गए, ये वाणियां लेखबद्ध की जाने लगी, तब तक ये क्षेपक भी मूल वाणी के अभिन्न अंग के रूप में समाहित होते चले गये। जिससे संत विशेष के सन्दर्भ में ऐतिहासिक तथा कई अन्य समस्याएँ भी उठ खड़ी हुई हैं। अतः संत वाणियों का अध्ययन अथवा सम्पादन करते समय मूलपाठ में पूर्णतया विलीन इन क्षेपकों की सम्भावनाओं को ध्यान में रखकर इनकी प्रामाणिकता को स्थापित करना बहुत मुश्किल कार्य है और इसमें सावधानीपूर्वक इनकी जांच करना आवश्यक है। आधुनिक काव्य में मानवीय अनुभूतियों सामाजिक विचार परम्पराओं, सांस्कृतिक मान्यताओं, धार्मिक अवस्थाओं तथा उनके बदले दार्शनिक दृष्टिकोणों और तत्जन्य नये साम्प्रदायिक परिवेशों की विस्तृत स्पष्ट जानकारी साहित्य से ही मिलती है। देशकाल के अनुसार निरन्तर बदलती हुई राजनीतिक सामाजिक सांस्कृतिक और आर्थिक परिस्थितियों के फलस्वरूप मानव जीवन के उद्देश्यों व आदर्शों, व्यक्तिगत आचार विचारों नैतिक मूल्यों और पारमार्थिक मान्यताओं आदि की बढ़ती हुई परम्पराओं की रूपरेखाएँ साहित्य के विस्तृत गहन अध्ययन और सूक्ष्म विश्लेषण से ही स्पष्ट हो सकती हैं, अतः किसी भी कृति अथवा किसी काल विषेष के साहित्य या काव्य का अध्ययन तथा विवेचन करते समय उनसे सम्बधित इन साहित्येतर विषयों की उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए।

अनुसंधान प्रक्रिया का एक प्रमुख तत्व है वैज्ञानिक परीक्षण, क्योंकि यह परीक्षण सोद्देश्य एवं नियोजित होता है। यह अनुसंधान निरीक्षण तक सीमित न रहकर समस्या का निदान भी खोजता है। इसलिए अनुसंधान की प्रक्रिया तार्किक होती है, जिसमें गहनता और विशिष्टता का समावेश होता है। यह क्रिया खोखले शाब्दिक तर्कों पर निर्भर न होकर प्रदेय के ठोस धरातल पर आधारित होता है। छायावादी कविताओं के विश्लेषण में भी शोधार्थी दुविधापूर्ण स्थिति में होता है क्योंकि छायावादी कवियों पर पूर्ववर्ती कवियों का प्रभाव भी दृष्टिगोचर होता है। शोधार्थी के सामने यह समस्या होती है कि वह उन कवियों को छायावादी कवियों की श्रेणी में रखे या किसी अन्य श्रेणी में। छायावादी कवियों पर

प्रगतिवाद व प्रयोगवाद का प्रभाव भी स्पष्ट दिखाई देता है, अतः उनको किसी एक दायरे में सीमित करना एक कठिन समस्या है, जिसका समाधान भी उचित रूप से किया जाना चाहिए। छायावाद का विश्लेषण करते समय शोधार्थी के लिए आवश्यक है कि वह अपने ज्ञान के अनुसार यह निश्चित करें कि चयनित कवि किस वाद का प्रतिनिधित्व करता है।

समकालीन कविता जो कि आधुनिक काव्य का महत्वपूर्ण अंश है, उसके शोध में भी हमें कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इन कविताओं में एन्द्रिकता धीरे-धीरे गायब हो गई है, जिससे इसमें सपाट बयानबाजी प्रमुखता से दिखाई दे रही है, जब हम इन कविताओं पर शोध करते हैं तो हमारे सामने ये समस्या खड़ी होती है कि इसमें हम अपनी प्रस्तुति किस प्रकार से दे। इन कविताओं में जीवन की बहुत सारी समस्याएं इंगित हैं। पर उन समस्याओं का समाधान नहीं है। ऐसे में शोधार्थी को समस्याओं का समाधान अपनी तरफ से प्रस्तुत करना पड़ता है न कि कवि की तरफ से। समकालीन कविता में यथार्थ बोध की पड़ताल होना बाकी है। हम यथार्थ को प्रस्तुत करने के लिए कई बार इतने बेबाक हो जाते है कि शब्दों पर नियंत्रण नहीं रह जाता है ऐसे में शोधार्थी का कर्तव्य है कि वह शब्दों के प्रस्तुतीकरण पर ध्यान दे परंतु ऐसा नहीं हो रहा है।

अकविता के शोध में भी शोधार्थियों को समस्या का सामना करना पड़ता है क्योंकि अकविता छंद मुक्त होती है और कई बार शोधार्थी को यह समझ में नहीं आता है कि वह काव्य में रूप में है या चम्पूकाव्य के रूप में है। ऐसे में गद्य व पद्य में विभेद करना कठिन हो जाता है। अकविता का शोध करते समय शोधार्थी व्याकरणिक दृष्टि से असर्मथ हो जाता है कि वह कविता को किस शैली में प्रस्तुत करें उसके सामने यह समस्या आती है कि काव्य के तत्वों के आधार पर उसका विश्लेषण नहीं कर सकता। शोध में आने वाली समस्याओं के समाधान हेतु प्रत्येक विश्वविद्यालय में हिन्दी साहित्य से सम्बन्धित एवं संक्षिप्त शोध पत्रिका का प्रकाशन इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम हो सकता है। हिन्दी प्राध्यापक की स्वयं के ज्ञान के आधार पर नई-नई युक्तियों की खोज की जानी चाहिए। जिससे शोध में नवीनता आ सकें। हिन्दी काव्य के शोध विषयों का चयन कुछ नवीन आयामों में किया जाना चाहिए, जैसे सूर की कविताओं में चाक्षुश बिम्बों का अध्ययन अथवा तुलसी की विनय पत्रिका में भक्ति का स्वरूप। जिससे शोधकर्ता कुछ मौलिक अनुसंधान करने में सक्षम हो हिन्दी के पुस्तकालयों की दशा भी चिंतनीय है। प्रत्येक शोध संस्थानों में पुस्तकों की पर्याप्त संख्या होना चाहिए। जब तक किसी विषय पर सामग्री सुलभ न हो उस विषय का पंजीकरण ही नहीं किया जाना चाहिए। इस प्रकार यह भी आवश्यक कर देना चाहिए कि जब तक मानक पत्र-पत्रिकाओं में उस विषय से सम्बद्ध कुछ शोध लेखों का प्रकाशन न हो तब तक शोध छात्र को शोध करने की अनुमति नहीं देना चाहिए। इस प्रकार नियमों में कुछ कठोर प्रावधान करने पर ही हिन्दी साहित्य में शोध के स्तर को सुधारा जा सकता है। अतः शोध छात्रों का कम से कम उस विषय में ज्ञान का स्तर, शोध निर्देशकों का उस विषय का विशेषज्ञ होना, शोध पत्रिका का प्रकाशन शोध पुस्तकों की सुलभता और सामग्री संकलन का ज्ञान कुछ वे मानक हैं, जिनेक आधार पर

हिन्दी साहित्य की शोध को वैज्ञानिक मानक और मौलिक बनाया जा सकता है। साथ ही साहित्यिक शोध के लिए आशागत सामर्थ्य, अभिव्यक्ति की प्रवीणता व शोधदृष्टि के कौशल का निर्वाह करते हुये अपने विषय में अनुसंधान के परिवेश को आगे बढ़ा सके। इस तथ्यों को केन्द्र में रखकर ही हिन्दी साहित्य में शोध की दशा में सुधार किया जा सकता है और अनेक समस्याओं का इससे अपने आप निराकरण हो सकता है।